Day : B.I.E, B.Ed I[st]
Date :
C-05 5.04.2021

ATUL

पाठ्यक्रम की आवश्यकता व महत्व

i) सुव्यवस्थित शिक्षा की व्यवस्था (Well organised Education System)

2) उद्देश्यों की प्राप्ति - (Attainment of objectives)

3) ज्ञान प्राप्ति का साधन (Source of Acquiring knowledge)

4) शिक्षण सामग्री का निर्धारण (Determination of Study Material)

5) स्तर बनाये रखने में सहायक - (Helpful in Maintaing the Standard)

6. मूल्यांकन प्रक्रिया में सहायक (Helpful in Evaluation Process)

7) लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास (Development of Democractic Values)

8) आवश्यकताओं की पूर्ति (fulfilment of Needs)

9) पाठ्य - पुस्तकों के निर्माण में सहायक

10) शिक्षण विधियों का चयन

11) समय एवं शक्ति की बचत

12) शिक्षकों के लिए मापदण्ड

13) विस्तृत अनुभवों का विकास

14) विभिन्न विषयों के बारे में ज्ञान

15) स्थानीय स्त्रोतों का अधिक प्रयोग

16) पाठ्यक्रम एक साधन के रूप में

marketing@atulauto.co.in | www.atulauto.co.in

17) पाठ्यक्रम व विद्यालय का वातावरण

18) पाठ्यक्रम में क्रियाओं का महत्व

Day : B.I.E B.Ed , Ist

Date :

C-05 6.07.2021

ATUL

1) सुव्यवस्थित शिक्षा की व्यवस्था - पाठ्यक्रम द्वारा प्रचलित शिक्षा प्रणाली को व्यवस्थित किया जा सकता है, इससे यह निश्चित करने में सुविधा रहती है। कि शिक्षा के किस स्तर पर कौन-सी विषयवस्तु पढ़ानी है कौन-सी क्रियाएं करनी है, तथा कौन-कौन से अनुभव प्रदान करने है, पाठ्यक्रम की सहायता से ही यह निश्चित करने में सुविधा रहती है। कि छात्रों में विभिन्न स्तरों पर कौन सी क्षमताएं प्रवृत्तियों तथा रुचियों का विकास करना है।

2) उद्देश्यों की प्राप्ति - समाज की शैक्षिक आकांक्षाओं तथा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सर्वप्रथम शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है और इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण तथा विकास किया जाता है। पाठ्यक्रम के अभाव में शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति असम्भव है। तथा इसके अभाव में शिक्षण कार्य भी सम्भव नहीं हो पाता।

3) ज्ञान प्राप्ति का साधन - यह संसार ज्ञान या अनेक रहस्यों से भरा हुआ है। मनुष्य हर समय इस ज्ञान व रहस्यों को जानने के लिए उत्सुक रहता है, परन्तु यह ज्ञान वह केवल पाठ्यक्रम के द्वारा ही प्राप्त कर सकते है। पाठ्यक्रम का निर्माण ज्ञान प्राप्ति के आधार पर किया जाता है। ज्ञान प्राप्त करके मनुष्य अपने अनुभवों में वृद्धि करता है। जिससे वह समाज में अच्छा जीवन व्यतीत कर सकता है।

marketing@atulauto.co.in | www.atulauto.co.in

Day : B.I.E, B.Ed 1st
Date : C-95 . 7.07.2021

(4) शिक्षण सामग्री का निर्धारण → पाठ्यक्रम हमें बताता है कि क्या पढ़ना है, इसकी सहायता से शिक्षा के विभिन्न स्तरों तथा कक्षाओं के लिए पाठ्य-सामग्री का निर्धारण करने में सहायता मिलती है। पाठ्यक्रमों को बताता है कि विभिन्न कक्षाओं में क्या पढ़ना चाहिए। जहाँ सुस्पष्ट पाठ्यक्रम नहीं है, वहाँ पर निश्चित करना कठिन हो जाता है कि शिक्षक द्वारा क्या पढ़ाया जाए।

(5) स्तर बनाये रखने में सहायक → यदि पाठ्यक्रम सुनिश्चित रहा है तो इससे शिक्षा के स्तर को बनाये रखने में सहायता मिलती है। पाठ्यक्रम के आधार पर ही दो या अधिक शिक्षा प्रणालियों का तुलनात्मक अध्ययन करना सम्भव हो जाता है। पाठ्यक्रम के विश्लेषण से हम बहुत कुछ मात्रा में शिक्षा के स्तर के उत्थान एवं पतन का भी विश्लेषण से हम बहुत कुछ मात्रा में शिक्षा के स्तर के उत्थान एवं पतन का भी विश्लेषण कर सकते हैं।

(6) मूल्यांकन प्रक्रिया में सहायक :— पाठ्यक्रम के कारण ही मूल्यांकन प्रक्रिया सरल, सहज तथा वैज्ञानिक बनती है। निश्चित पाठ्यक्रम होने पर ही छात्रों की योग्यताओं तथा क्षमताओं का सही मूल्यांकन संभव हो पाता है, पाठ्यक्रम के अभाव में मूल्यांकन सम्भव नहीं है। यदि पाठ्यक्रम के अभाव में मूल्यांकन किया जायेगा तो उसमें वैधता तथा विश्वसनीयता का अभाव होगा।

ATUL
arketing@atulauto.co.in | www.atulauto.co.in

Day : B.I.E B.Ed. 1st

Date : C-05 | 8.09.2021

7) लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास → वर्तमान युग लोकतंत्र का युग है। जहाँ पर सभी नागरिकों को एक समान समझा जाता है। वहीं दूसरी ओर कोई किसी भेदभाव के शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है लोकतंत्र में सभी को समानता व स्वतंत्रता का अधिकार प्राप्त है। जिससे उनमें एकरूपता, न्याय भ्रातृत्व सामूहिक जीवन आदि गुणों को पैदा किया जाता है। यह गुण छात्रों में केवल विद्यालय पाठ्यक्रम के द्वारा ही पैदा करता है। ये गुण छात्रों में लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास करने में सहायक माने जाते है।

8) आवश्यकताओं की पूर्ति → विद्यालय में पढ़ने वाले प्रत्येक छात्र की कुछ आवश्यकताएँ होती हैं इन आवश्यकताओं की पूर्ति वह पाठ्यक्रम के द्वारा ही करता है। बालक के साथ-साथ प्रत्येक व्यक्ति और समाज की भी अपनी आवश्यकताएं होती हैं, इन सबकी पूर्ति भी पाठ्यक्रम द्वारा ही सम्भव है। प्रत्येक समाज व राष्ट्र चाहता है कि नागरिकों में राष्ट्रप्रेम, अच्छी नागरिकता व राष्ट्र के प्रति कर्तव्य की भावना पैदा हो। यह केवल पाठ्यक्रम द्वारा ही सम्भव हो पाता है पाठ्यक्रम ही नागरिकों में ऐसे गुणों का विकास करने में सहायक हो सकता है, विद्यालय पाठ्यक्रम का निर्माण राष्ट्र, समाज व बालक की आवश्यकताओं के आधार पर करके इन सबकी पूर्ति करता है।

ATUL
marketing@atulauto.co.in | www.atulauto.co.in

B.Ed 1st

C-05 8.7.2021

ATUL

9. पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण में सहायक :- पाठ्यक्रम की सहायता से ही सुनिश्चित पाठ्य-पुस्तकों की रचना करना सम्भव होता है। पाठ्यक्रम के अभाव में सामान्य पुस्तकें तो लिखी जा सकती हैं, परन्तु पाठ्य-पुस्तकें नहीं। हम यह भी नहीं जानते हैं कि पाठ्य-पुस्तकों के अभाव में शिक्षा को व्यवस्थित रूप प्रदान करना सम्भव नहीं होता।

10. समय एवं शक्ति की बचत :- पाठ्यक्रम के कारण ही शिक्षक तथा छात्र अनेकानेक निरर्थक क्रियाओं से बच जाते हैं। वे अपनी क्रियाओं को पाठ्यक्रम की सीमाओं में ही सीमित रखते हैं इससे उन्हें समय तथा शक्ति की बचत होती है। पाठ्यक्रम के कारण ही अध्यापक यह सुनिश्चित कर पाता है कि उसे क्या और कब पढ़ाना है, वह अपने शिक्षण की योजना बना पाता है तथा छात्र भी यह जान लेते हैं कि उन्हें क्या और कब पढ़ना है। पाठ्यक्रम के कारण उन्हें इधर-उधर भटकने की आवश्यकता नहीं रहती है। इससे छात्र एवं शिक्षक दोनों को ही सुविधा मिलती है।

11) शिक्षकों के लिए मापदण्ड - शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में पाठ्यक्रम शिक्षक द्वारा आगे बढ़ाया जाता है, पाठ्यक्रम शिक्षकों के लिए मापदण्ड तैयार करता है, कि शिक्षक पाठ्यक्रम को किस प्रकार छात्रों तक पहुँचाए। सभी विषयों को एक ही शिक्षक द्वारा आसानी से नहीं पढ़ाया जा सकता है। इसलिए पाठ्यक्रम शिक्षकों के लिए मापदण्ड तैयार करता है

rketing@atulauto.co.in | www.atulauto.co.in

Day : B.I.E B.Ed 1st
Date :
C-05 9.7.2021

ATUL

12) शिक्षण विधियों का चुनाव :- पाठ्यक्रम ही शिक्षण विधियों का निर्धारण करता है। जैसा पाठ्यक्रम होगा उसी अनुरूप ही शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है। यही कारण है कि हिन्दी भाषा की शिक्षण पद्धतियाँ रसायन विज्ञान की शिक्षण पद्धतियों से भिन्न होती हैं। पाठ्यक्रम के अभाव में शिक्षक के लिए शिक्षण विधियों का चयन करना बड़ा कठिन हो जाता है।

13) निरन्तर अनुभवों का विकास :- पाठ्यक्रम निरन्तर तथा क्रमानुसार अनुभवों के विकास का परिणाम है, क्योंकि समय और परिस्थितियों के अनुसार प्रत्येक वस्तु में परिवर्तन होता है। उसी तरह पाठ्यक्रम निरन्तर व क्रमानुसार अनुभवों का विकास करता है। विद्यार्थियों में निरन्तर व क्रमानुसार अनुभवों का विकास करने में पाठ्यक्रम बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। क्योंकि विद्यार्थी को एक क्रम के अनुसार ज्ञान प्रदान किया जाता है। जैसे बालक पहले अपने परिवार व आस-पास के वातावरण को समझता है, व उसके बाद उसे राष्ट्र व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की जानकारी दी जाती है। यह विकास निरन्तर व क्रमानुसार चलता रहता है।

B.Ed / B.Ed

Day :

Date : C-05 10.7.2021

ATUL

14) विभिन्न विषयों के बारे में ज्ञान — पाठ्यक्रम छात्रों को विभिन्न विषयों के बारे में ज्ञान प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पाठ्यक्रम के प्रारूप में ही तो विभिन्न विषयों जैसे विज्ञान, अर्थशास्त्र, भूगोल, समाजशास्त्र व इतिहास आदि के बारे में विस्तारपूर्वक ज्ञान प्रदान करता है। पाठ्यक्रम विभिन्न विषयों को एक सूत्र में जोड़कर छात्रों को भविष्य के जीवन में प्रयोग करने को तैयार करता है। ये विषय छात्रों के भविष्य जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए तैयार करते हैं।

15) स्थानीय स्रोतों का अधिक प्रयोग — पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय स्थानीय स्रोतों का अधिक प्रयोग किया जाता है। पाठ्यक्रम को जब विद्यार्थी कक्षा या विद्यालय में ग्रहण करते हैं तो वो अपने स्थानीय स्रोतों को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार प्रयोग कर सकते हैं।